Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

16 4 V3



# चि० आनन्द

एवम्

# आ० शशिप्रभा

के

# परिणय-पर्व पर

## सप्रेम भेंट

सिलीगुड़ी — रतीरामशर्मा

दि० ७ जनवरी १९७९

CC-0.In Public Domain. Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"गृहाश्रम उसको कहते हैं कि जो ऐहिक और पारलौकिक सुख प्राप्ति के लिये विवाह करके अपने सामर्थ्य के अनुसार परोपकार करना और नियत काल में यथाविधि ईश्वरोपासना और गृहकृत्य करना एवं सत्यधर्म में ही अपना तन-मन-धन लगाना तथा संतानों की उत्पत्ति करनी।"

— महर्षि दयानंद सरस्वती

CC-0.In Public Domain. Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

# विवाह क्या है ?

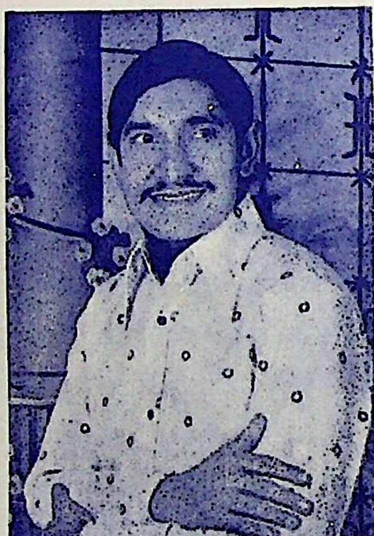
## मात्र भौतिक मिलन या आध्यात्मिक उन्नति का सोपान :

जगन्नियन्ता जगदीश्वर की मधुमयी सृष्टि में नर-नारी के मिलन की सरल मधुर धारा अनादि काल से प्रवाहित होती आ रही है। यह मिलन नियन्ता के कृतित्व की ही साकार अभिव्यक्ति है, और विवाह उसका अभिधान है। विवाह (वह=प्रापणे) का शाब्दिक अर्थ है—'विशेष रूप से पहुंचाना' पति की पत्नी के समीप और पत्नी को पति के समीप ताकि वे अपने जीवन की पूर्णता की ओर अग्रसर हो सके। पुरुष के बिना स्त्री और स्त्री के बिना पुरुष अधूरा है। विवाह जीवन की पूर्णता है। विवाह का लक्ष्य पति-पत्नी का भौतिक मिलन ही नहीं, वरन् एक ऐसा आधार प्रदान करना है जिस पर कदम रख कर मानव-मानवी आध्यात्म-लोक में प्रविष्ट हो सकें। विवाह मात्र शारीरिक मिलन का रंगमंच नहीं, आध्यात्मिक जीवन की भूमिका है।



CC-0.In Public Domain. Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri



# आयुष्मान आनंद कुमार शर्मा

एम काम, एलएल.बी.

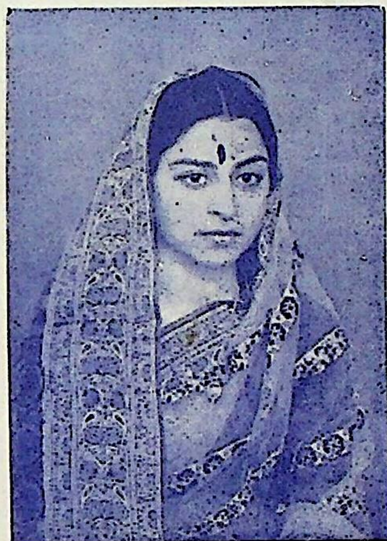
लेक्चरर वाणिज्य विभाग

श्रीराम कालेज ऑफ कामर्स, दिल्ली विश्वविद्यालय

मेरे कुल की मर्यादायें
हों तेरे कुल की रेखायें
पत्थर पर अंकित धारा सा
अमिट रहे तेरा गठबन्धन
हो मर्यादामय शुभ जीवन।

CC-0.In Public Domain. Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri



## आयुष्मती शशिप्रभा

एम. ए. (गृह विज्ञान)
आगरा विश्वविद्यालय

सूरज का प्रकाश देना ध्रुव
नभ का रस बरसा देना ध्रुव
जिससे आनन्दित हो कण-कण
हो मर्यादामय शुभ जीवन !

CC-0.In Public Domain. Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri



# वैदिक विवाह की उदात्त भावना

मनुष्य के जीवन को सुसंस्कृत करने के उद्देश्य से हमारे मनीषियों ने जीवन में सोलह संस्कारों का विधान किया है। विवाह इनमें एक महत्त्वपूर्ण संस्कार है। विवाह की भित्ति त्याग और सेवा है, लोभ और स्वार्थ नहीं। वर व वधू दोनों भावनाओं से ओत-प्रोत हो एक दूसरे का वरण करते हैं। विवाह का जो भावनात्मक पक्ष है—वह अत्यन्त ही मनोरम व हृदयग्राही है। वेद ने इसे अनूठे ढंग से दर्शाया है :—

पत्नी पति से कहती है—

अक्ष्यौ नौ मधुसंकाशे अनीकं नौ समञ्जनम्।
अन्तः कृष्णुष्व मां हृदि मन इन्नौ सहासति ॥
अथर्ववेद

हम दोनों परस्पर ऐसे प्रेम से रहें कि हम दोनों की आँखों से माधुर्य टपकता हो, हम दोनों का मुख एक दूसरे को देखकर खिल उठता हो। हे प्यारे पति ! तू मुझे अपने हृदय के अन्दर बैठा ले, हम दोनों का मन सदा साथ रहे।

पति उत्तर देता है—

मम त्वा दोषणिश्रिषं कृणोमि हृदयश्रिषम्।
यथा मम क्रतावसो मम चित्तमुपायसि ॥ अथर्व

हे प्यारी पत्नी ! मैं तुम्हें अपनी भुजा का सहारा देता हूँ, अपने हृदय में स्थान देता हूँ। तू मेरे कर्मों में सहयोग दे, तू मेरे चित्त में रम जा।

यह वैदिक प्रीतिभाव का आदर्श है।

CC-0.In Public Domain. Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri



विवाह एक ऐसा अवसर है जो एक को एक से जोड़ता है, और और उन्हें जोड़कर एक ही बनाए रखता है। वर व वधू की ऐक्य कामना का मनोहारी दृश्य देखिए :—

यदैषि मनसा दूरं दिशोऽनु पवमानो वा।
हिरण्यपर्णो वैकर्णः स त्वा मन्मनसां करोतु ॥

हे वरानन/वरानने ! वरण कर लो।
प्यार का आधार देकर वासना का हरण कर लो।
भानु-किरणें वायु का संस्पर्श ले जैसे थिरकतीं ॥
सलिल-कण से वाष्प लेकर भूमि के ऊपर बरसतीं ॥
शस्य-श्यामल वन धरित्री सफल हो झांझर बजाती।
दशः दिशाएँ नाच उठतीं, गीत के सरगम सुनाती ॥
हे वरानन! ठीक तुम उसी भाँति मेरा हाथ ले लो।
मदिर सुख के उत्स फूटें, मुझे अपने साथ ले लो ॥
हे वरानन/वरानने ! वरण कर लो।

हमारे संस्कृति में संस्कार संस्कृत के मंत्रों से करने का विधान है। उन मन्त्रों में भावों की ऊँची उड़ान है। उन भावों को हृदयगम कर ही हम वैदिक विवाह का वैशिष्ठ्य व उदार भावना को समझ सकते हैं। अवलोकनार्थ प्रस्तुत है—पाणिग्रहण का एक मन्त्र और इसके भाव—

भगस्ते हस्तमग्रभीत् सविता हस्तमग्रभीत्।
पत्नी त्वमसि धर्मणाहं गृहपतिस्तव ॥

CC-0.In Public Domain. Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri



प्रिय ! तुम्हारे हाथ का जब ग्रहण मैंने कर लिया।
संसार की शुचि संपदा का वरण जैसे कर लिया ।।
यह हाथ मेरी प्रेरणा का स्रोत, पावन धर्म के—
पथ में रहेगा मार्ग-दर्शक रूप में मेरे लिए।
तुम धर्म से हो आज मेरी भार्या सहधर्मिणी,
तुम मूर्त्त हर्षोल्लास हो, साकार प्रणय प्रकाश हो।
मैं धर्म से गृहस्वामी बनकर प्राप्त कर लूँगा सभी
सहयोग से तेरे प्रिये ! हर सफलता संसार की ।।

लाजाहोम में भुने हुये चावलों (खीलों) की हवि मंत्रसहित को जाती है देखिए लाजाहोम के मंत्र में छिपी हुई भावना—

अर्यमणं देवं कन्या अग्निमयक्षत।
स नो अर्यमा देवः प्रेतो मुञ्चतु मा पतेः ।।

इसका भाव है—'वधू कहती है—कन्यायें जिस न्यायकारी नियन्ता पूजनीय देव ईश्वर की पूजा करती हैं वह न्यायकारी दिवास्वरूप परमात्मा हमको इस कुल से छुड़ावें और पति के साहचर्य से न छुड़ावें।

सप्तपदो में सात कदम सात प्रतीक हैं—

सप्तपदी में प्रथम चरण यह अन्नागार रहे आपूरित
और दूसरा चरण तुम्हारा ऊर्जा दे, दे शक्ति अपरिमित
तथा तीसरा चरण तुन्हारा करे ज्ञान को, धन को पोषित
चौथा चरण तुम्हारा सुभगे ! सुख से सदा रहे आप्लावित,
और पाँचवां चरण तुम्हारा हो सन्तति-परिपालन के हित
छठा चरण षड्ऋतुओं के अनुकूल बनाये यथा-अभीप्सित
और चरण सातवां सख्य के सुखद भाव से करे समन्वित
यही कामना करता हूं मैं तुम मेरे अनुकूल रहो नित
उस व्यापक परमात्मा की अनुकम्पा से हम दोनों मिलकर-
पायें पुत्र अनेक, जियें जो वृद्धावस्था तक आनन्दित।

CC-0.In Public Domain. Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri



विवाह संस्कार समर्पण का सस्कार है। वर वधू को, वधू वर को अपना हृदय समर्पित करते हैं। सर्वात्मना एक दूसरे के हो जाते हैं। और कहते हैं—

मम व्रते ते हृदयं दधामि मम चित्तमनु चित्तं ते अस्तु
मम वाचमेकमना जुषस्व प्रजापतिष्ट्वा निनयुक्तु मह्यम्।

वर की ओर से—

हे वधू! तेरे अन्तकरण और आत्मा को मेरे कर्म में धारण करता हूं। मेरे चित के अनुकूल तेरा चित्त सदा रहे। मेरी वाणी को तू एकाग्रचित्त से सेवन किया कर। प्रजा का पालन करने वाला परमात्मा तुझको मेरे लिये नियुक्त करे।

वधू की ओर से—

हे प्रियवर स्वामिन्! आपका हृदय आत्मा और अन्तःकरण अपने प्रियाचरण कर्म में धारण करती हूं। मेरे चित्त के अनुकूल आपका चित्त सदा रहे। आप एकाग्र होकर मेरी वाणी का जो कुछ मैं आप से कहूं उसका सेवन सदा कीजिये, क्योंकि आज से प्रजापति परमात्मा ने आपको मेरे अधीन किया है। वैसे मुझको आपके अधीन किया है।



CC-0.In Public Domain. Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

# वर की ओर से–

हे परमात्मन् !
प्रभो ! अग्नि !
तुम्हारी ही
पूजा, अर्चना के लिये
मैंने इस कन्या का
भार्यात्व स्वीकारा है ।
तुम्हीं से प्राप्त सौन्दर्य ने
इसका रूप सँवारा है ।
अब
मैं हूँ, यह है, तुम हो
हमें ऐसा सौभाग्य दो,
कि
हम प्रजायुक्त होकर
जो चाहें
वही हमारा भाग्य हो ।।

चाहता हूं आज मित्रों, बन्धुओं, सम्बन्धियों–
के वर्ग से शुभकामनाओं की मनोरम सम्पदा
मेरी इस प्रिय पत्नी को अभिवृद्धि का सौभाग्य का
मिलता रहे निस्सीम सुख चाहें सभी यह सर्वदा ।'

CC-0.In Public Domain. Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

# वधू की ओर से :-

हे जगन्नियन्ता अग्निदेव !
तुम हो कुलवधुओं के सुहागरक्षणकारी
हे ज्योतिर्मय, कल्याण न्याय के व्रतधारी
मर्यादा, नीतिव्यवस्था के सर्जक महान्
मैं पली, पितृकुल में ममता की छाया में
दुर्लभ दुलार मां का, वात्सल्य पिता का
भैय्या बहनों का अपनापन
यह वैभव जिसके सम्मुख है नगण्य कञ्चन
हे विधि-विधानकारी मुझसे यह पितृवंश छूटता,
मगर है विनय देव !
मैं बनूं प्राणपति की काया की छाया,
नयनों का चितवन,
उनके उर की अविरल धड़कन
हम कभी न बिछुड़ें हो चाहे वह वीहड़ वन
या राग-पराग भरा मधु माधव का उपवन
ज्यों अम्बर का नीलापन धरा का सौंधापन
ज्यों चाँद-चाँदनी, सूर्य-प्रभा, ज्यों शब्द-अर्थ
त्यों ईश ! हमारा रहे सनातन साहचर्य ।



CC-0.In Public Domain. Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

# वर की ओर से–

हे परमात्मन् !
प्रभो ! अग्नि !
तुम्हारी ही
पूजा, अर्चना के लिये
मैंने इस कन्या का
भार्यात्व स्वीकारा है।
तुम्हीं से प्राप्त सौन्दर्य ने
इसका रूप सँवारा है।
अब
मैं हूँ, यह है, तुम हो
हमें ऐसा सौभाग्य दो,
कि
हम प्रजायुक्त होकर
जो चाहें
वही हमारा भाग्य हो ॥

चाहता हूं आज मित्रों, बन्धुओं, सम्बन्धियों—
के वर्ग से शुभकामनाओं की मनोरम सम्पदा
मेरी इस प्रिय पत्नी को अभिवृद्धि का सौभाग्य का
मिलता रहे निस्सीम सुख चाहें सभी यह सर्वदा।'

CC-0.In Public Domain. Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

# वधू की ओर से :–

हे जगन्नियन्ता अग्निदेव !
तुम हो कुलवधुओं के सुहागरक्षणकारी
हे ज्योतिर्मय, कल्याण न्याय के व्रतधारी
मर्यादा, नीतिव्यवस्था के सर्जक महान्
मैं पली, पितृकुल में ममता की छाया में
दुर्लभ दुलार मां का, वात्सल्य पिता का
भैय्या बहनों का अपनापन
यह वैभव जिसके सम्मुख है नगण्य कञ्चन
हे विधि-विधानकारी मुझसे यह पितृवंश छूटता,
मगर है विनय देव !
मैं बनूं प्राणपति की काया की छाया,
नयनों का चितवन,
उनके उर की अविरल धड़कन
हम कभी न बिछुड़ें हो चाहे वह वीहड़ वन
या राग-पराग भरा मधु माधव का उपवन
ज्यों अम्बर का नीलापन धरा का सौंधापन
ज्यों चाँद-चाँदनी, सूर्य-प्रभा, ज्यों शब्द-अर्थ
त्यों ईश ! हमारा रहे सनातन साहचर्य ।



CC-0.In Public Domain. Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri



# आर्शीवचनम्

सुमंगलीरियं वधूरिमां समेत पश्यत
सौभाग्यमस्यै दत्वायाथास्तं विपरतेन ॥ —ऋग्वेद

आओ !
सब मिलकर आओ !
देखो, पाविनी, विवाह-वेदिका
सुन्दर जिस पर वधू सजी है।
मंगलमय इसके वस्त्राभूषण,
कंगन, नूपुर, वेंदी, गोरोचन,
देखो, इसको उत्सुकता से,
और करो श्रृंगार
स्वयं के भाव-सुमन से।
आशीर्वाद बिखेरो,
जैसे बादल बरस गये हों।
फिर, जाओ
जैसे जब, चाहो
देकर भी कुछ लिये हुये से ॥



CC-0.In Public Domain. Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri



# वेद-आशीष

इहेमाविन्द्र सं नुद चक्रवाकेव दम्पती
प्रजयैनौ स्वस्तकौ विश्वमायुर्व्यश्नुताम् । अथर्व १४.२.६४

प्रभु करे तुम दोनों पति-पत्नी चकवा-चकवी की तरह प्रेम-सूत्र में आवद्ध रहो। तुम्हें सन्तान प्राप्त हो। सुन्दर घर में रहते हुए गृहस्थाश्रम की सारी आयु का उपभोग करते रहो।

त्वष्टा जायामजनयत् त्वष्टास्यै त्वां पतिम् ।
त्वष्टा सहस्रमापूंषि दीर्घमायुः कृणोतु वाम् ।। अथर्व ६.७८.३

प्रभु ने इस पति के लिए तुझ पत्नी को जन्म दिया है, प्रभु ने इस पत्नी के लिये तुझ पति को जन्म दिया है। यही प्रभु तुम दोनों की आयु को सुदीर्घ करे।। प्रभु करे, तुम दोनों की जोड़ी युग-युग जीती रहे।



CC-0.In Public Domain. Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri



# पिताश्री की ओर से :—

मेरे द्वितीय पुत्र चि० आनन्द के जीवन के द्वितीय आश्रम (गृहस्थाश्रम) के शुभारम्भ की इस मांगलिक वेला में मैं हर्षित और आह्लादित हूं। इस आन्ददायक घड़ी में आप सब का हार्दिक स्वागत करते हुये सर्वनियन्ता सर्वेश की महती अनुकम्पा का स्मरण हो रहा है।

मैंने व्यक्तिगत जीवन में जो कुछ पाया है, उन समस्त उपलब्धियों की प्रेरणा में भारत का एक महान् योगी महर्षि दयानन्द सरस्वती व उनके द्वारा प्रतिपादित एक शुभ्र संगठन आर्यसमाज है। इसलिये मैं दयानन्द और आर्यसमाज का ऋणी हूं। मैं चाहूंगा—कि मेरा यह पुत्र व मेरी यह पुत्र-वधू इस ऋण को चुकाने में मेरा हाथ बटाएं और अपने जीवन को वैदिक-सौरभ से सुरभित कर अन्यों के लिये प्रेरणा व आदर्श वनें।

नवीन जीवन के स्वप्न संजोए यह युगल आप सबके आशी: का आकाँक्षी है। आपकी ओर से इस अवसर पर यही सर्वाधिक मूल्यवान भेंट है। स्थानीय तथा दूर-दराज से आए समस्त बन्धुओं, मित्रों, सम्वन्धियों, स्वजनों व प्रियजनों का मैं आभारी हूं। उनके स्नेह व आत्मीयता ने इस शुभावसर को स्नेह-दीपों से सजाकर मेरे आनन्द में और अभिवृद्धि कर दी है।

अपनी ओर से तथा सहधर्मिणी की ओर से पुत्र व पुत्र-वधू के लिये सुख ही सुख की कामना करते हुए उन्हें कोटिश: आशीष देता हूं। ईश्वर सदैव उनके जीवन पर चारों ओर से खुशियां बिखेरता रहे। शुभमस्तु दिने-दिने।

शुभाकांक्षी—
रतीराम शर्मा
सिलीगुड़ी

CC-0.In Public Domain. Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri



# वधू के पिता की ओर से—

यथा सिन्धुर्नदीनां साम्राज्यं सुषुवे वृषा ।
एषा त्वं साम्राज्येधि पायुरस्तं परेत्य ।। अथर्व०

जिस भाँति नदियाँ सिन्धु के साम्राज्य में जीवन विता ।
गति-मति समर्पित कर उसी को मोद पातीं सर्वदा ।।
उस भाँति, बेटी पहुँच कर प्राणेश पति के गेह में ।
तुम सौंप कर सर्वस्व निज को भूल जाना स्नेह में ।।

आशाताना सौमनसं प्रजां सौभाग्यं रयिम् ।
पायुरनुव्रता भूत्वा सं नह्यस्वामृताय कम् ।। अथर्व०

सौभाग्य, सन्तति सौमनस्, सम्पत्ति की आशा लिये ।
पतिदेव के अनुकूल यदि शुभ आचरण तुमने किये,
तो अभ्युदय की वाटिका इस लोक में खिल जायगी ।
निश्चय समझना सिद्धता अमरत्व की मिल जायगी ।



CC-0.In Public Domain. Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri



# माता की ओर से वधू को उपदेश

शुश्रूषस्व गुरून् कुरु प्रियसखी वृत्तिं सपत्नी जने ।
भर्तृ विप्रकृतापि रोषणतया मास्म प्रतीप गमः ॥
भूयिष्ठं भव दक्षिणा परिजने भागेष्वनुत्सेकिनी
यान्त्येवं गृहिणीपदं युवतयो वामाः कुलस्यायः ॥
—कालिदास (अभिज्ञानशाकुन्तलम)

सास, श्वसुर आदि गुरुजन की, श्रद्धानत सेवा करना ।
अपमानित या क्रोधित हो, तब भी शान्त भाव रखना ।
पति के जो अनुकूल बने, वही आचरण तुम करना ।
अपने आश्रित जो सेवक हों, उनके प्रति उदार बनना ।
सौभाग्य मिला है जो तुमको, उस पर गर्व नहीं करना ।
इस प्रकार के जीवन वाली, सच्ची गृहलक्ष्मी बनना ।
विपरीत आचरण कुलनाशक है बात याद यह तुम रखना ॥





CC-0.In Public Domain. Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri



# प्रणय-ग्रन्थिः

## आनन्द-शशिप्रभा-परिणये सस्नेहम्–

आ नन्द-सन्दोह-तरङ्ग-चञ्चलो
न दो सुखस्यात्सवजस्य निर्वह-
न्द दाति तोषं रतिराम-मन्दिरे
श शिप्रभाऽनन्द-विवाह-भूषिते ।

शशिप्रभां प्रति
शि लोपमा ते दृढताऽस्तुकर्मसु
प्र गाढमीयात् पति-प्रेम-बन्धनम्,
भा स्वाँश्च सौभाग्यमखण्डमक्षयं
शु भं शिवो यच्छतु वः शशिप्रभे ।

आनन्दं प्रति
भ क्तिस्तु ते स्याद् गुरु-पाद-पद्मयोः
वि द्या त आनन्द, विवेक-वर्धिनी,
वा चश्च ते सत्यपरा वराः प्रियाः
ह राङ्घ्रि-कञ्जेषु सदाऽस्तु मानसम् ।

शशिप्रभेयं शशिनः, प्रभेव
आनन्दमानन्दमतीव दद्यात्
आनन्ददः सोऽपि नव-प्रियायै
आनन्द कन्दोपम-सोम्य-दर्शी
यदवधि जल-जाते-शेष-शायी रमेशः
यदवधि कमलानां कोश भेदी दिनेशः,
यदवधि रजताभं रम्य-राकेश-विम्बं
तदवधि युवयोः स्यात् सुदृढा प्रेम-ग्रन्थिः ।

रक्षपाल राकेश शास्त्री
सहित्याचार्य, प्रभाकर (हिन्दी)
पुरातन-व्यापारी-भवन
मुरादपुर, पटना-४

CC-0.In Public Domain. Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri





शशिप्रभा आनन्द की, प्रभो !
युगल जोड़ी चिर जिये ।
देव, ऋषि व पितृ-ऋण से
मुक्ति का संकल्प लिये ।।
धर्ममय आचार नित हो,
धर्मयुक्त विचार हो ।
कर्त्तव्य पालनरत निरन्तर,
ईश में अनुरक्त हों ।।
मांगलिक सब कार्य होवे,
वरद-हस्ता शारदा ।
लोक में कीर्ति बढ़े,
लक्ष्मी प्रसन्ना सर्वदा ।।
रतिरामजी घर बज रही,
मादक मधुर शहनाइयाँ ।
दे रहे स्मित-मुख मुदित जन,
शत सहस्र बधाइयाँ ।।
गुरुजनों को नमन करती,
पति सहित जब शशिप्रभा ।
जननी का मन-मयूर नाचा,
निरख रवि-शशि की विभा ।।
धन्य धन्य अति मंगलमय हो
जीवन युगल तुम्हारा ।
तुम से बढ़े धर्म का गौरव,
मातु-पिता का सपना प्यारा ।।

**शुभम् भूयात्**

—शंकरलाल भातरा एडवोकेट
आदित्य प्रेस बिल्डिग, गौहाटी

CC-0.In Public Domain. Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri


## GOOD WISHES AND BLESSINGS

I am very happy to know that the marriage ceremony of Shriman Anand Kumar and Shrimati Shashi Prabha will be solemnised at Siliguri on 7th January 1979 I am all the more happy because Anand is one of those who have endeared themselves to me by their academic zeal and pleasant manners. On the auspicious occasion of their marriage I would like to convey to dear Anand and his bride my best wishes for a bright and prosperous conjugal life. I pray to God that He may grant them a blissful time in their life's journey.

—P. K. Ghosh
Vice-Chancellor
University of North Bengal
Raja-Rammohanpur
Dt. Darjeeling

Dt. 14 Dec. '78

CC-0.In Public Domain. Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

चिरंजीव आनन्द कुमार शर्मा के विवाहोत्सव के शुभावसर पर मैं भावी दम्पत्ति के लिए अपनी हार्दिक शुभ कामनाएं एवं आशीर्वाद प्रेषित करता हूँ। ईश्वर उन्हें जीवन में सुख,समृद्धि एवं सफलता प्रदान करें यही मंगल कामना है !

डा० फूल चन्द
डाइरेक्टर
इन्स्टीच्यूट ऑफ कन्स्टीच्यूशनल एण्ड
पार्लियामेन्टरी स्टडीज
पार्लियामेन्ट स्ट्रीट
नई दिल्ली

तिथि १७-१२-७८



CC-0.In Public Domain. Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri



*To*

*ANAND*

A very special couple
Are becoming Man and Wife,

To share a home together,
And the ups and downs of life,

So warm congratulations
Are sent to you today,

Hoping you'll find happiness
On this, your Wedding Day.

—PAUL AND SYLVIA

Dr. Parshu Ram & Mrs. Sylvia Agarwal.
60 A WHITE LANE CHAPELTOWN
SHEFFIELD, ENGLAND

CC-0.In Public Domain. Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हमारे धर्मग्रन्थों ने मनुष्य-जीवन के चार लक्ष्य बताए हैं—धर्म, अर्थ, काम और मोक्ष। आजकल के युग में अर्थ और काम पर जितना बल दिया जाता है, उतना धर्म और मोक्ष पर नहीं। वैदिक संस्कृति की दृष्टि से न अर्थ हेय है, न काम। इसीलिए ऋषियों ने उनके लिए अलग-अलग शास्त्रों की रचना की—अर्थ के लिए अर्थशास्त्र और काम के काम-शास्त्र। पर अपने जीवन-व्यापी अनुभव के आधार पर उन्होंने यह भी निर्धारित किया कि धर्म-विहीन अर्थ और धर्म-विहीन काम दोनो ही बन्धन-कारी हैं। आज के युग की विषमताओं और विडम्बनाओं का मूल मर्यादा-रहित अर्थ और काम का समर्थक पाश्चात्य संस्कृति के प्रति अनुराग है। इस बात को स्वयं पश्चिम के भी समझदार लोग अनुभव करने लगे हैं। पर अपने देश का शिक्षित वर्ग अभी तक उसी अनर्थकारी संस्कृति के अनुकरण में लगा हुआ है।

प्रियवर आनन्दकुमार! अब तुम गृहस्थाश्रम में प्रवेश कर रहे हो। इस आनन्दवर्धक अवसर पर तुमसे यही आशा करता हूं कि अपने दाम्पत्य-जीवन में तुम वैदिक आदर्शों को यथाशक्ति क्रियान्वित करोगे और औरों के लिए अनुकरणीय उदाहरण उपस्थित करोगे। सौभाग्य से तुम्हारी जीवन-संगिनी भी तुम्हारे विचारों के अनुकूल मिली है। अब तुम एक और एक मिल कर दो नहीं, प्रत्युत एक और एक मिल कर ग्यारह बन गये हो। अपने विचारों को कार्यरूप में परिणत करो, यही मेरी कामना है। तुम्हारे चिर-सुखी जीवन की अशेष आकांक्षाओं के साथ—

**—क्षितिश कुमार वेदालंकार**

सहसम्पादक, दैनिक हिन्दुस्तान

नई दिल्ली-१

CC-0.In Public Domain. Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri



# —: आत्मविकास की बेला :—

प्रो० आनन्दकुमार शर्मा के विवाह के आयोजन का शुभ संवाद पाकर हर्ष हुआ। यह अवसर ही ऐसा है। विवाह के बाद व्यक्ति एक से दो होकर सच्चे अर्थों में सामाजिकता का पाठ पढ़ता है। अकेला रहकर वह प्रायः अपने विषय में सोचता है और अपने ही विकास की चिन्ता करता है। विवाह के बाद वह दूसरे को अपना बनाता है और उसकी चिन्ता करके अपनी पूर्णता के प्रति आश्वस्त होता है। वह दूसरे के लिए जीने का अभ्यास डालता है, और बदले में दूसरे का अपनापन पाकर जीवन को अधिक सशक्त, अधिक सरस और अधिक अर्थयुक्त पाता हैं। वह उत्तरोत्तर उस दिशा में अग्रसर होता है जहाँ दो, दो न रहकर, एक ही हो जाते हैं।

आत्मविकास की इस बेला में आनन्दकुमार जी को हार्दिक बधाई और मंगलकामनाएँ।

आनन्दकुमार जी मेरे निकट रहे हैं। उनका शील-स्वभाव, सेवा-भाव और मित्रता निर्वाह करने की सहज प्रवृत्ति अविस्मरणीय है। वे अत्यन्त सम्पन्न परिवार के व्यक्ति होते हुए भी अध्ययन-प्रेमी हैं। लक्ष्मी और सरस्वती का यह अनुपम संयोग आह्लादकारी है। उनके शिक्षा का असाधारण 'कैरियर' इस तथ्य का जीवन्त प्रमाण है। उनके स्वभाव और प्रवृत्ति के अनुरूप ही उन्हें चिरसंगिनी प्राप्त हुई है; यह बात बड़े सन्तोष की है। वर-वधू अभिन्न स्नेह बंधन में बंध जायें, सदैव प्रसन्न रहें और सभी सम्बन्धित जनों को अपनी सहज प्रसन्नता में भागीदार बनायें।

विवाह सानन्द सम्पन्न हो और प्रभु परमात्मा का वर-वधू को आशीर्वाद प्राप्त हो मेरी—हार्दिक कामना है।

शुभाकांक्षी
**डा० शशिभूषण सिंहल डी० लिट**
आचार्य एवं अध्यक्ष
हिन्दी विभाग
**महर्षि दयानन्द विश्वविद्यालय, रोहतक**

CC-0.In Public Domain. Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri


## 'स्व' से 'सर्व' की ओर

परम स्नेही मित्रवर प्रो० ग्रानन्द कुमार शर्मा के पाणिग्रहण संस्कार की शुभ बेला पर मैं ग्रपनी समस्त मंगलकामनाएं सस्नेह प्रेषित करता हूँ। बन्धुवर ग्रानन्द कुमारजी मेरे उन घनिष्टतम मित्रों में से है, जिन पर मुझे सदैव गर्व का ग्रनुभव होता है। इनकी सहज, सरल ग्रौर सौहार्दपूर्ण वृत्ति बरबस ही मुझे ग्रपने स्नेह पाश में जकड़ती रही है। विवाह वास्तव में स्त्री पुरुष के ग्रन्तःकरण से स्वीकृत परस्पर हार्दिक सम्बन्ध ही हैं। पाणिग्रहण संस्कार सूत्र में बंधने के उपरान्त पति-पत्नी सहधर्मी ग्रौर सहकर्मी होकर परस्पर कर्तव्यनिष्ठ ग्रौर ग्रर्पण की भावना से मिलकर रहते है। इस ग्रापसी सहयोग के ग्राधार पर ही उनका उत्कर्ष होता हैं। विवाह ग्रापसी ग्रधिकार-भाव का नाम नहीं है ग्रपितु इससे सर्वथा भिन्न सेवा ग्रौर ग्रर्पण का भाव हैं। जब यह स्वीकार्य होगा तो उसे यज्ञ कहेंगे। यज्ञ में भोग का सुख नहीं है, त्याग का ही ग्रानन्द है। विवाह का ग्राधार भोग मूलक नहीं ग्रपितु त्याग मूलक है। जब पति-पत्नी परस्पर सेव्य या साध्य बनते हैं तभी इसकी सार्थकता हैं।

**डा० बलराजसिंह राणा**
एम० ए०, पी० एच० डी
प्राध्यापक हिन्दी विभाग
**महर्षि दयानन्द विश्वविद्यालय**
सांध्य महाविद्यालय
रोहतक
दिनाँक २५-१२-७८

CC-0.In Public Domain. Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri



Dear Shri Anand Kumar,

I am extremely glad to learn about your marriage. I very much wanted to attend it but due to certain pressing engagements, I regret my inability.

Marriage, according to our age-long traditions, is a very important occasion in one's life. Besides, it being sacrosanct it makes an individual more responsible towards the family and the society.

I convey my sincere blessings to you and pray to God for a very happy married life.

—B. R. Vyas
Deputy Director of Education
DELHI.

CC-0.In Public Domain. Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri


# मंगल-कामना

आयुष्मान् आनन्द एवं आयुष्मती शशि के विवाह-संस्कार के शुभावसर पर मङ्गलकामना स्वरूप दो शब्द लिखने में सुख-सौभाग्य का अनुभव हो रहा है।

नियन्त्रण, अनुशासन एवं बन्धन सभ्यता-संस्कृति के प्राण हैं। इस नियन्त्रण-अनुशासन-बन्धन में मानव की व्यक्तिगत एवं समष्टि-गत चरम उन्नति सुसाध्य बन जाती है, जीवन के आदर्शों पर अनुचरण सरल बन जाते हैं।

सभी सभ्यता संस्कृतियों में किसी न किसी रूप में विवाह प्रचलित है। पर विवाह का वैदिक आदर्श धर्म की मर्यादा में निहित है; धर्म ही पति पत्नी के जीवन को जोड़ने वाला सूत्र है। वर अपनी वधू से कहता है—

**"पत्नी त्वमसि धर्मणाऽहं गृहपतिस्तव"**

परम प्रभु जगदीश्वर की अनुकम्पा से यह जोड़ी सुख सौभाग्य को प्राप्तकर आदर्श दम्पती के रूप में धर्म-जाति देश की सेवा में सुखी समृद्धि रहें, यही मङ्गल कामना है।

—उमाकान्त उपाध्याय
कलकत्ता

CC-0.In Public Domain. Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

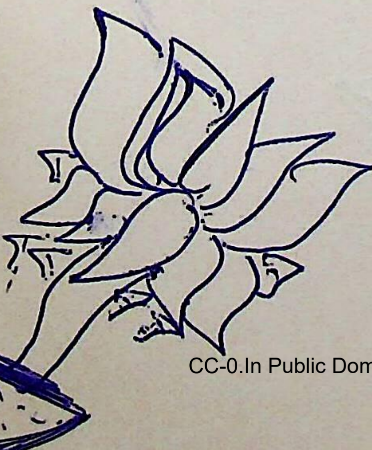
Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri



## समस्त स्नेही मित्रों की ओर से —

मित्र हमारा आज खड़ा है नव जीवन के द्वारे
हम सभी के हृदय फूले हैं खुशी के मारे।
इस सुपावन महापर्व पर कर रहे हम कामना
आनन्द-शशि का जीवन हो सुख, शान्ति, श्री का आंगना।।
बरसें चहुंदिशि से इन पर धन सुख सम्पदा
गाता रहे यह युगल गीत प्रेम के सर्वदा।





CC-0.In Public Domain. Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri


# मंगल-कामना

आयुष्मान् आनन्द एवं आयुष्मती शशि के विवाह-संस्कार के शुभावसर पर मङ्गलकामना स्वरूप दो शब्द लिखने में सुख-सौभाग्य का अनुभव हो रहा है।

नियन्त्रण, अनुशासन एवं बन्धन सभ्यता-संस्कृति के प्राण हैं। इस नियन्त्रण-अनुशासन-बन्धन में मानव की व्यक्तिगत एवं समष्टि-गत चरम उन्नति सुसाध्य बन जाती है, जीवन के आदर्शों पर अनुचरण सरल बन जाते हैं।

सभी सभ्यता संस्कृतियों में किसी न किसी रूप में विवाह प्रचलित है। पर विवाह का वैदिक आदर्श धर्म की मर्यादा में निहित है; धर्म ही पति पत्नी के जीवन को जोड़ने वाला सूत्र है। वर अपनी वधू से कहता है—

**"पत्नी त्वमसि धर्मणाऽहं गृहपतिस्तव"**

परम प्रभु जगदीश्वर की अनुकम्पा से यह जोड़ी सुख सौभाग्य को प्राप्तकर आदर्श दम्पती के रूप में धर्म-जाति देश की सेवा में सुखी समृद्धि रहें, यही मङ्गल कामना है।

-- उमाकान्त उपाध्याय
कलकत्ता

CC-0.In Public Domain. Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

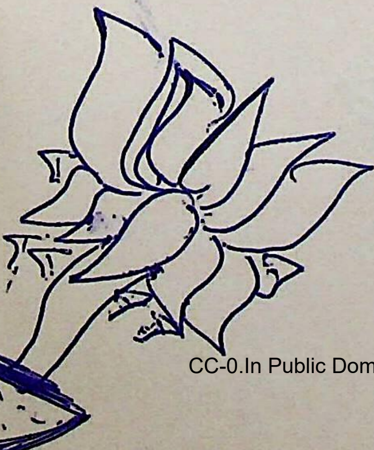
Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri



## समस्त स्नेही मित्रों की ओर से —

मित्र हमारा आज खड़ा है नव जीवन के द्वारे
हम सभी के हृदय फूले हैं खुशी के मारे।
इस सुपावन महापर्व पर कर रहे हम कामना
आनन्द-शशि का जीवन हो सुख, शान्ति, श्री का आंगना।।
बरसें चहुंदिशि से इन पर धन सुख सम्पदा
गाता रहे यह युगल गीत प्रेम के सर्वदा।





CC-0.In Public Domain. Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

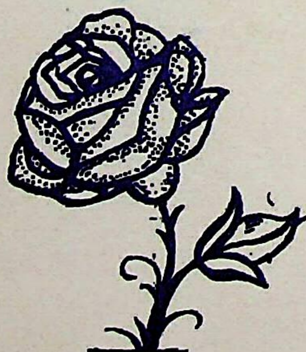
Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri


# सम्पादक एवं समुपस्थित समस्त शुभकांक्षियों की ओर से शुभकामना

शुभास्ते सन्तु पन्थानः ।
तव वर्त्मनि वर्ततां शुभम ।।

जीवन-यात्रा निष्कंटक हो,
मार्ग तुम्हारा सहज, सरल हो ।
राह चलो तुम प्रेम-पंथ की,
हर दिन ज्योतिर्मय, मंगल हो ।

—शुभमस्तु दिने दिने.



N.P.Printers, Delhi-7.

CC-0.In Public Domain. Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

# मनुस्मृति के रचियता मनु के माननीय विचार :—

यथा नदीनदः सर्वे सागरे यान्ति संस्थितिम् ।
तथैवाश्रमिणः सर्वे गृहस्थे यान्ति संस्थितिम् ।
यथा वायुं समाश्रित्व वर्तन्ते सर्वजन्तवः ।
तथा गृहस्थमाश्रित्य वर्तन्ते सर्वाश्रमाः ।

अर्थात् जैसे नदी और बड़े-बड़े नद तब तक भ्रमते ही रहते हैं जबतक समुद्र को प्राप्त नहीं होते, वैसे गृहस्थ ही के आश्रय से सब आश्रम स्थिर रहते हैं । जैसे वायु के आश्रय सब प्राणी हैं वैसे गृहस्थाश्रम सब आश्रमों का आश्रय है ।

सम्पादक

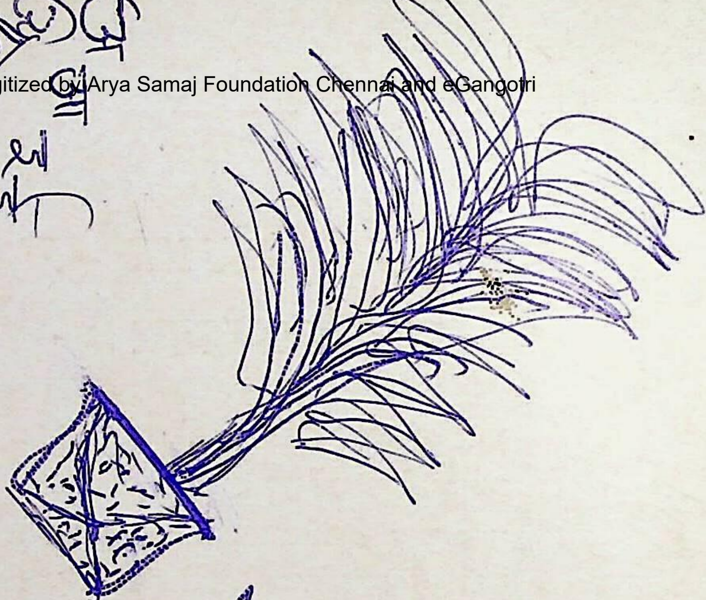
**डा० वाचस्पति उपाध्याय**

रीडर, संस्कृत विभाग

दिल्ली-विश्वविद्यालय

CC-0.In Public Domain. Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri



CC-0.In Public Domain. Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.